

# पाठ-४

# कर्म

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



99260-40137

# कर्म

जो अपनी आत्मा के असली  
स्वभाव को प्रकट न होने दे

# कर्म

द्रव्य कर्म

आत्मा से सम्बद्ध  
ज्ञानावरणादि आठ  
कर्म

भाव कर्म

मोह, राग-द्वेषरूपी  
विकारी भाव

# द्रव्य और भाव कर्म में अंतर

## द्रव्य कर्म

भाव कर्म नष्ट होने पर स्वयं  
जीव से संबंध छूट जाता है

## भाव कर्म

जीव के पुरुषार्थ से नष्ट  
होता है

कर्म

```
graph TD; A[कर्म] --> B[घातिया]; A --> C[अघातिया]; B --> D[स्वभाव का घात होता]; C --> E[बाह्य सामग्री का संबंध बनता];
```

घातिया

अघातिया

स्वभाव का घात होता

बाह्य सामग्री का संबंध बनता

# घातिया

```
graph TD; A[घातिया] --> B[ज्ञानावरण]; A --> C[मोहनीय]; A --> D[दर्शनावरण]; A --> E[अंतराय];
```

ज्ञानावरण

मोहनीय

दर्शनावरण

अंतराय

# अध्यातिया

आयु

गोत्र

वेदनीय

नाम

# ज्ञानावरण



जो आत्मा के ज्ञान गुण को  
घाते (अर्थात् प्रकट न होने दे)



# दर्शनावरण कर्म

जो आत्मा के दर्शन गुण को  
घाते (अर्थात् प्रकट न होने दे)

# मोहनीय

जो आत्मा के सम्यक्त्व और  
चारित्र गुण को घाते (अर्थात्  
विपरीत करे)

# मोहनीय कर्म के भेद

```
graph TD; A[मोहनीय कर्म के भेद] --> B[दर्शन मोहनीय]; A --> C[चारित्र मोहनीय]; B --- D{3}; C --- E{25}
```

दर्शन  
मोहनीय

3

चारित्र  
मोहनीय

25



# दर्शन मोहनीय

जो आत्मा के सम्यक्त्व गुण  
को घाते



चारित्र  
मोहनीय

जो आत्मा के चारित्र गुण को  
घाते

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

# चारित्र मोहनीय के भेद

कषाय

16 कषाय

नो कषाय

9 नोकषाय

क्रोध

मान

माया

लोभ

16 कषाय

अनंतानुबंधी

संज्वलन

अप्रत्याख्यानावरण

प्रत्याख्यानावरण

# नोकषाय

☀हास्य

☀जुगुप्सा

☀रति

☀स्त्री वेद

☀अरति

☀पुरुष वेद

☀शोक

☀नपुंसक वेद

☀भय



# अंतराय



जो दानादिक में विघ्न डाले



वेदनीय

जिस कर्म के फल से जीव को  
आकुलता हो

# वेदनीय कर्म के भेद

साता

असाता

सुखरूप अनुभव  
अनुकूल सामग्री की  
प्राप्ति

दुःखरूप अनुभव  
प्रतिकूल सामग्री की  
प्राप्ति



# आयु

जो कर्म आत्मा को नारक, तिर्यंच,  
मनुष्य और देव के शरीर में रोके  
रखे

# आयु कर्म के भेद

नरक

तिर्यंच

मनुष्य

देव

नारकी

तिर्यंच

मनुष्य

देव

के शरीर में रोके रखें



नाम

जो शरीरादिक बनावे

# नाम कर्म के भेद

शुभ

अशुभ

सुंदर शरीरादि बनावे

कुरूप शरीरादि बनावे

नाम कर्म की कुल 93 प्रकृतियाँ हैं



गोत्र

जो जीव को अँच-नीच कुल में  
उत्पन्न करावे



# गोत्र कर्म के भेद

ऊँच

नीच

लोक पूजित कुल  
में जन्म हो

निन्दित कुल में  
जन्म हो

# कर्म के उदाहरण

मूल कर्म	उदाहरण
ज्ञानावरण	मूर्ति पर डला कपड़ा
दर्शनावरण	पहरेदार
मोहनीय	मदिरा
अंतराय	खजांची
आयु	बेड़ी
नाम	चित्रकार
गोत्र	कुम्हार
वेदनीय	शहद लपेटों तलवार की धार

# क्या कर्म आत्मा को दुःखी करते हैं?

आत्मा स्वयं को भूलकर मोह, राग-द्वेषरूप  
परिणामन करता है, तो दुःखी होता है

कर्म का उदय उस समय निमित्त होता है

कर्म जबरदस्ती आत्मा को विकार नहीं  
कराते हैं

# कर्म बंध चक्र

